International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 47-48

भारतीय संस्कृति, सिनेमा और हिंदी (वैश्विक संदर्भ में)

अनिशा सिवाच

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ–साथ नष्ट होती रही है किन्तु भारत की संस्कृति आदिकाल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर–अमर बनी हुई है। उसकी उदारता एवं समन्वयवादी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तो किया है लेकिन अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है।

'संस्कृति' शब्द 'संस्कार' शब्द से बना है। संस्कार 'सम्' उपसर्ग पूवर्क 'कृ' धातु में 'धम्' प्रत्यय लगाने से बनता है, जिसका मूल अर्थ है – सुधारना या परिष्कार करना।[1] इसके आधार पर संस्कृति शब्द का अर्थ होगा – सुधारने वाली या परिष्कार करने वाली। ''संस्कृति उन उदात्त विचारों और पवित्र कार्यों की श्रृंखला को कहते हैं जो किसी देश या जाति को गति प्रदान करते हैं।''[2]

डॉ० रामसजन पाण्डेय के अनुसार, ''संस्कृति मानव के गतानुगतिक संस्कारों का वह सफल रूप है जिससे उसके सामाजिक आचार–विचार, पर्व–त्योहार, रहनी–करनी, रीति–रिवाज, नीति–कार्य, अध्यात्मकता आदि की प्रतिति होती है।''[3] संस्कृति प्राचीनता और नवीनता को धारण किए हुए अपना विकास करती है।

जब किसी जाति, वर्ग या समुदाय के रीति–रिवाज, रहन–सहन की पद्धति और आचार–विचार रूढ़ होकर किसी परम्परा का रूप धारण कर लेते हैं, तो वह परम्परा ही उस वर्ग, समुदाय या जाति विशेष की संस्कृति कहलाती है। सांस्कृतिक परम्पराएँ नष्ट नहीं होती, बल्कि युग परिवर्तन के साथ उनमें भी परिवर्तन आता रहता है। जब प्राचीन परम्पराएँ नवीन परम्पराओं के संदर्भ में आती है तो कुछ प्राचीन तत्त्व नष्ट हो जाते हैं और कुछ नवीन संदर्भ जुड़ जाते हैं। इस प्रकार, जब एक संस्कृति का संपर्क दूसरी संस्कृति से होता है तो वे प्रायः एक–दूसरे को प्रभावित करती हैं।

रामधारी सिंह 'दिनकर' का मानना है कि संस्कृति मानव जीवन में उसी तरह व्याप्त है, जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता, युग–युगान्तर में संस्कृति निर्मित होती है।

प्रारम्भ से ही भारतीय संस्कृति अत्यन्त उदात्त, समन्वयवादी, सशक्त एवं जीवन्त रही है, जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अद्भुत समन्वय पाया जाता है। वस्तुतः शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास ही संस्कृति की कसौटी है, जिस पर भारतीय संस्कृति पूर्ण रूप से खरी उतरती है।

भारत अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मतों और पृथक आस्थाओं एवं विश्वासों का देश है, तथापि इसका सांस्कृतिक समुच्चय और अनेकता में एकता का स्वरूप संसार के अन्य देशों के लिए आश्चर्य का विषय रहा है।

संस्कृति व्यक्तिगत न होकर सामाजिक होती है। सामाजिक गुण जैसे – धर्म, प्रथा, परम्परा, रीति–रिवाज, कानून, साहित्य, भाषा आदि से मिलकर संस्कृति बनती है। यह सीखा हुआ व्यवहार है, जो अनेक पीढ़ियों तक हस्तान्तरित होता रहता है। मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी है, अतः वह अपने ज्ञान के आधार पर अपने सीखे हुए व्यवहार को अपनी भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित कर देता है। इसी हस्तान्तरणशीलता के कारण संस्कृति हजारों–लाखों वर्षों के बाद भी नष्ट नहीं होती है।

भारतीय संस्कृति एक गतिशील दर्शन है इसलिए उसमें देश, धर्म और काल भी लक्षित होते हैं लेकिन संस्कृति वह सीमा भी निर्धारित करती है जिसमें हमें परिवर्तन और अस्वीकार की दृष्टि मिलती है। कहा जाता है कि जिस संस्कृति में लोकतंत्र एवं स्थायित्व के आधार व्यापक हों, उस संस्कृति के ग्रहणशीलता की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हो जाती है। ऐसी ही है – हमारी भारतीय संस्कृति।

मनुष्य की अमूल्य निधि संस्कृति, एक ऐसा पर्यावरण है जिसमें रहकर व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी बनता है तथा प्राकृतिक पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता अर्जित करता है। संस्कृति एक व्यवस्था है, जिसमें हम जीवन के प्रतिमानों, व्यवहार के तरीकों, परम्पराओं, विचारों, सामाजिक मूल्यों, मानवीय क्रियाओं और आविष्कारों को शामिल करते हैं।

भारतीय सिनेमा शुरूआत से ही एक सीमा तक भारतीय समाज का आईना रहा है जो समाज की हकीकत को बयां करता आया है। गत दशकों की बात करें तो देखने को मिलेगा कि भारतीय सिनेमा में शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों की सीमाओं को लाँघते हुए वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। टेलीविजन के व्यापक प्रसार के कारण अब विश्व के प्रत्येक भू–भाग में हिंदी फिल्मों तथा हिंदी गानों की लोकप्रियता सर्वविदित है।

वर्तमान में हिंदी की व्यापक लोकप्रियता और इसे संप्रेषण के माध्यम से रूप में मिली आम स्वीकृति किसी संवैधानिक प्रावधान या किसी सरकारी दबाव का परिणाम नहीं है। मनोरंजन और फिल्म की दुनिया ने इसे व्यापार और आर्थिक लाभ की भाषा के रूप में आश्चर्यजनक रूप से शनैः–शनैः स्थापित किया।

भाषा–प्रसार उसके प्रयोक्ता–समूह की संस्कृति और जातीय प्रश्नों को साथ लेकर चलता है। भारतीय सिनेमा निश्चय ही हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में अपनी विश्वव्यापी भूमिका का निर्वाह सफलतापूर्वक कर रहा है। उनकी यह प्रक्रिया अत्यंत सहज, रोचक, बोध गम्य और ग्राह्य है। जब हम भारतीय सिनेमा पर दृष्टिपात करते हैं तो भाषा का प्रचार–प्रसार, साहित्यिक कृत्तियों का फिल्मी रूपांतरण, हिंदी गीतों की लोकप्रियता, हिंदी की उपभाषाओं, बोलियों का सिनेमा और सांस्कृतिक प्रश्नों को उभारने में भारतीय सिनेमा का योगदान जैसे मुद्दे महत्त्वपूर्ण ढंग से सामने आते हैं।

हिंदी भाषा के संरचनात्मक शैली, वैज्ञानिक अध्ययन, जन–संप्रेषणीयता, पटकथात्मकता के निर्माण, संवाद लेखन, दृश्यात्मकता, कोड निर्माण, संक्षिप्त कथन, बिंबधर्मिता, प्रतीकात्मकता आदि मानकों को भारतीय सिनेमा ने गढ़ा है। भारतीय सिनेमा हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति का लोकदूत बनकर इन तक पहुँचने की दिशा में अग्रसर है।

जिस प्रकार एक कवि या लेखक की रचनाओं में तत्कालीन परिस्थितियों का प्रतिबिंब हमें देखने को मिलता है, ठीक उसी प्रकार

से सिनेमा में भी समाज की वास्तविकता काफी हद तक स्पष्ट हो जाती है। कहानियाँ कितनी भी काल्पनिक क्यों न हों, वो हमारे आस–पास के परिवेश से जुड़ी होती है। यही स्थिति सिनेमा में भी अभिव्यक्त होती है। लेकिन हाँ यह कहना भी आवश्यक है कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। इसलिए सिनेमा का असर हमारे युवाओं और बच्चों पर – सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में हुआ है। यह हमारे सोचने–समझने की क्षमता एवं मानसिकता पर निर्भर करता है कि हम किस पहलू को ज्यादा महत्त्व देते हैं। सकारात्मक हो या नकारात्मक किसी को भी जीवन में आत्मसात् करने पर हम अपने जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदल सकते हैं। अतः हर माध्यम के अपने प्रभाव होते हैं, समाज पर।

भारतीय सिनेमा के आरंभिक दशकों में जो फिल्में बनती थी, उनमें भारतीय संस्कृति की महक रची–बसी होती थी तथा विभिन्न आयामों से भारतीयता को उभारा जाता था। वर्तमान समय में जो फिल्में बन रही हैं उनमें वैश्विक समस्याओं जैसे – आतंकवाद आदि विषयों को मुद्दा बनाकर सकारात्मक हल खोजती फिल्में बनी हैं।

अत्याधुनिक उपकरणों तथा उत्कृष्ट प्रस्तुति के साथ आज हम नए युग में पहुँच चुके हैं, लेकिन गुणवत्ता के मामले में भारतीय सिनेमा को अभी लंबी दूरी तय करनी है। साथ ही यह भी तय करना है कि समाज के उत्थान में उसकी क्या भूमिका हो?

भाषा स्थानांतरण दुनिया के उत्कृष्ट कार्यक्रमों को हिंदी के माध्यम से रातों–रात करोड़ों नए दर्शक दे रहा है। यह स्वतन्त्र बाजार और प्रतिस्पर्धा का आज का स्वीकृत खेल है। एक सच यह भी है कि एक तरह से हिंदी भाषा बाज़ार और मुनाफे की कुँजी बन रहा है।

आज हॉलीवुड के फिल्म निर्माता भी भारत में अपनी विपणन नीति बदल रहे हैं। वे जान चुके हैं कि यदि उनकी फिल्में हिन्दी में रूपांतरित की जाएँगी तो यहाँ वे अपने मूल अंग्रेजी रूप के समकक्ष मुनाफ़ा कमाएँगी। यही वजह है कि वे अधिकतर अंग्रेजी फिल्मों का हिंदी भाषा में रूपांतरण करके हिंदी भाषी दर्शकों का रूझान अपनी फिल्मों में बढ़ा रहे हैं। साथ ही साथ आर्थिक स्थिति को मजबूत करके दोहरा मुनाफ़ा कमा रहे हैं।

हॉलीवुड की आज की वैश्विक बाज़ार की परिभाषा में हिंदी जानने वालों का महत्त्व सहसा बढ़ गया है। भारत को आकर्षित करने का अर्थ अब उनकी दृष्टि में हिंदी भाषियों को भी उतना ही महत्त्व देना है। परन्तु इन सबके पीछे छिपा हुआ एक सच यह है कि आज बाजार की भाषा में हिंदी को अंग्रेजी की अनुचरी नहीं, सहचरी बना दिया है।

हिंदी भाषा के चहुँमुखी विकास और प्रसार में 'हिंदी यूनिवर्स फांउडेशन' नीदरलैंड जैसी वैश्विक संस्थाओं का अमूल्य योगदान है। इसकी निदेशिका डॉ० पुष्पिता अवस्थी के अनुसार, भारतीय संस्कृति और हिंदी की गहरी जड़ें अब भारतवंशियों के द्वारा विदेशों में और विशेषकर भारतवंशी बहुल देशों में जम चुकी हैं।

भाषा सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं है बल्कि हमारे संस्कारों और संस्कृति का भी अभिन्न हिस्सा है। हिंदी भाषा के प्रयोग व प्रसार को बढ़ाने के लिए भाषा–टैक्नोलॉजी को अपनाते हुए शिक्षा, साहित्य, मीडिया, मनोरंजन, व्यवसाय व उद्योग जगत् सहित सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। साथ ही अपने दैनिक जीवन में हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ाना होगा।

हिंदी भाषा के वैश्विक प्रसार के लिए हमें इंटरनेट माध्यम का सफलतापूर्वक प्रयोग बढ़ाना होगा। वर्तमान समय में हिंदी भाषा से संबंधित ब्लाग भी खूब लिखे जा रहे हैं। कई वेबसाइटें हैं जो हिंदी में उपलब्ध है, जिसका प्रयोग हिंदी भाषा की सार्थकता को सिद्ध करने में अहम् भूमिका निभाएगा।

अंत में कह सकते हैं कि आर्थिक सुधारों व उदारीकरण के दौर में निजी पहल का जो चमत्कार हमारे सामने आया है, उससे हिंदी भारतीय सिनेमा के माध्यम से दूर–दराज के एक बड़े भू–भाग में समझी जाने वाली भाषा बना दिया है जो वैश्विक स्तर पर अपने तथा अपनी संस्कति के वजूद को कायम रखने में सफल हुई है। निष्कर्षतः वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में भी भारतीय संस्कृति तथा हिंदी भाषा वैश्विक स्तर पर अपने पाँव जमाने में सफल हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. (संपादक) द्वारिका प्रसाद शर्मा, संस्कृत कौस्तुभ।
2. डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा, निराला काव्य का सांस्कृतिक पक्ष।
3. डॉ० रामसजन पाण्डेय, भक्तिकालीन हिंदी निर्गुण काव्य का सांस्कृतिक अनुशीलन।